॥ श्रीः ॥

वृन्दसतसई।

वृन्दकवि प्रणीत।

जिसमें

सामयिक नीति उदाहरण शिक्षा वर्णित हैं।

जिसका

सर्वजनोंके हितार्थ

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रकाशित किया.

संवत् १९८०, शके १८४५.

कल्याण-मुंबई.